5. सत्संगत्याः महिमा (क्त्वा, ल्यप् प्रत्ययः)

हिंदी अर्थ–

पहले एक जंगल में रत्नाकर नाम का एक लुटेरा रहता था। वह बहुत कठोर (निर्दयी) था। उसके रास्ते से जो कोई यात्री जाता था वह उसका धन छीन लेता था। जो कोई उसका विरोध करता था, रत्नाकर उसे बहुत पीटता था। एक बार उसके रास्ते से एक मुनि जा रहे थे।

लुटेरा – हे मुनि! वहीं रुको। जो कुछ भी तुम्हारे पास है, वह मुझे दे दो।

संन्यासी – हे लुटेरे! मैं संन्यासी हूँ। इस वन प्रदेश में मैं तपस्या करता हूँ। मेरे पास धन नहीं है।

लुटेरा – अपना जल पात्र छोड़कर जाओ अन्यथा तुम्हारा वध कर दूँगा।

संन्यासी – मेरा जीवन भी परोपकार के लिए है। अतः मैं मृत्यु के भय से मुक्त हूँ। परंतु तुम यह पाप किसलिए करते हो?

लुटेरा – मैं अपने परिवार के लिए यह करता हूँ।

संन्यासी – क्या तुम्हारे परिवार के सदस्य तुम्हारे पाप का फल भोगेंगे?

लुटेरा – और क्या! मेरे सभी भाई-बन्धु पाप में भी मेरे सहायक होंगे।

संन्यासी – घर जाकर पूछो।

लुटेरा – हे मुनि! तुम चतुर हो। जब मैं घर जाऊँगा तब तुम यहाँ से चले जाओगे।

संन्यासी – यदि विश्वास नहीं है, तो मुझे इस पेड़ से बाँधकर चले जाओ।

रत्नाकर मुनि को पेड़ से साथ बाँधकर घर जाता है। घर जाकर वह अपने पिता, माता, पत्नी और पुत्र से पूछता है।

लुटेरा – पिताजी! क्या तुम मेरे पाप में सहायक हो?

पिता – पुत्र! मनुष्य पाप का फल अपने आप ही प्राप्त करता है। मैं तुम्हारे पाप का सहायक नहीं हूँ।

लुटेरा – तुम मेरी पत्नी हो। निश्चित रूप से तुम मेरे पाप के फल का आधा भाग प्राप्त करोगी?

पत्नी – नहीं, नहीं स्वामी। मनुष्य अपने कर्मों का फल स्वयं ही पाता है।

लुटेरा – माँ! तुम तो मुझसे स्नेह करती हो। क्या तुम मेरे पाप का कुछ फल प्राप्त करोगी।

माँ – नहीं बेटा! अपने पाप का फल मनुष्य स्वयं ही प्राप्त करता है।

रत्नाकर का पुत्र भी इसी प्रकार कहता है।

परिवार के सदस्यों के उत्तर सुनकर घर से आकर रत्नाकर मुनि के पैरों में गिर गया।

लुटेरा – हे मुनि! आप सत्य कहते हो। कोई भी मेरे पाप में सहायक नहीं है। अब मैं क्या करूँ। कृपया मुझे उपदेश दीजिए।

संन्यासी – उठो पुत्र! 'राम-राम' ऐसा जपो। श्रीराम की कृपा से ही तुम्हारा उद्धार होगा।

लुटेरा – (जप करता हुआ) राम राम राम राम .....

मुनि के उपदेश से 'राम-राम' ऐसा जपते हुए रत्नाकर महर्षि वाल्मीकि हो गया। महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत में रामायण लिखी।

अभ्यासः

संकलनात्मकं मूल्यांकनम्

1. **उच्चैः पठत स्मरत च–** (ऊँचे स्वर में पढ़िए और याद कीजिए–)
   दिए गए क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय के पदों को छात्र याद करें तथा ऊँचे स्वर में पढ़ें।
2. **उचितं विकल्पं चिनुत–** (उचित विकल्प चुनिए–)

(क) (*iii*) वने	✓	(ख) (*i*) अतिक्रूरः	✓
(ग) (*iii*) तपः	✓	(घ) (*iv*) पञ्चमी	✓
(ङ) (*i*) पापे + अपि	✓	(च) (*ii*) करोमि	✓
(छ) (*ii*) लृट्लकारः	✓	(ज) (*i*) पुण्यस्य	✓

3. **एकपदेन उत्तरत–** (एक पद में उत्तर दीजिए–)
   (क) रत्नाकरः (ख) पथिकः (ग) मृत्योः
   (घ) वृक्षेण सह (ङ) मुनेः
4. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–** (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)
   (क) तेन मार्गेण यः कश्चित् पथिकः गच्छति स्म, सः तस्य धनं हरति स्म।
   (ख) रत्नाकरः अवदत्–भो मुने! यत् किञ्चित् तव समीपे अस्ति, मह्यम् यच्छ।
   (ग) मुनिः अपृच्छत्–त्वम् एतत् पापं किमर्थं करोषि? किं तव परिवारस्य सदस्याः तव पापस्य फलं प्राप्स्यन्ति?
   (घ) रत्नाकरः पितरम् अपृच्छत्–किं त्वं मम पापे सहायकः असि?

(ङ) रत्नाकरः स्वमातरम् अपृच्छत्–भो मातः! त्वं तु मयि स्निह्यसि। किं त्वं मम पापस्य किञ्चित् फलं प्राप्स्यसि?

(च) रत्नाकरस्य भार्या तम् अवदत्–भर्तः! मानवः स्वकर्मणः फलं स्वयम् आप्नोति।

5. **रजिंतपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–** (रंगीन पदों के आधार पर प्रश्न बनाइए–)

(क) कः वने वसति स्म? (ख) कस्य नाम रत्नाकरः आसीत्?

(ग) सः कस्मै कार्यं करोति? (घ) कस्य फलं मानवः स्वयमेव आप्नोति?

(ङ) कः वनमार्गेण गच्छति स्म?

6. **अधोलिखितक्रियापदानां धातु-लकार-पुरुष-वचनानि लिखत–**

(नीचे लिखे क्रियापदों के धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिए–)

क्रियापदम्	**धातुः**	**लकारः**	**पुरुषः**	**वचनम्**
यच्छ	दा (यच्छ्)	लोट्लकारः	मध्यमः	एकवचनम्
करोमि	कृ	लट्लकारः	उत्तमः	एकवचनम्
करिष्यामि	कृ	लृट्लकारः	उत्तमः	एकवचनम्
अस्मि	अस्	लट्लकारः	उत्तमः	एकवचनम्
प्राप्स्यन्ति	प्र + आप्	लृट्लकारः	प्रथमः	बहुवचनम्
पृच्छ	पृच्छ्	लोट्लकारः	मध्यमः	एकवचनम्
गमिष्यामि	गम् (गच्छ्)	लृट्लकारः	उत्तमः	एकवचनम्
अवदत्	वद्	लङ्लकारः	प्रथमः	एकवचनम्

7. **अधोलिखितवाक्यानि लङ्लकारे परिवर्तयत–** (नीचे लिखे वाक्यों को लङ्लकार में बदलिए–)

(क) रत्नाकरः एकः तस्करः आसीत्। (ख) मुनिः वनप्रदेशे तपः अकरोत्।

(ग) रत्नाकरः स्वगृहम् अगच्छत्। (घ) रत्नाकरः स्वपितरम् अपृच्छत्।

(ङ) रत्नाकरस्य भार्या तम् अवदत्।

8. **उदाहरणानुसारं प्रत्ययं योजयित्वा लिखत–** (उदाहरण के अनुसार प्रत्यय लगाकर लिखिए–)

पठ् + क्त्वा = पठित्वा

हस् + क्त्वा = हसित्वा

गम् + क्त्वा = गत्वा

खाद् + क्त्वा = खादित्वा

सम् + लिख् + ल्यप् = संलिख्य

प्र + आप् + ल्यप् = प्राप्य

सम् + पठ् + ल्यप् = संपठ्य

अव + गम् + ल्यप् = अवगम्य